कहानी

देहदान

- प्रा धन्यकुमार जिनपाल बिराजदार

पडोसी वीणा के पति शशिकांत की मृत्यु चार साल पहले हुई थी। इकलौता बेटा सुदीप अमेरिका में सॉफ्टवेयर इंजीनियर था। पैकेज बहुत ही अच्छा था। पिता की मृत्यु के बाद तीन-चार बार वह माँ से मिलने आया था परंतु कंपनी के काम अधिक होने पर आना कम कर दिया। पिछली बार कंपनी का काम लेकर दिल्ली आया था। वहीं से फोन पर बातें करते हुए फ्लाइट से अमेरिका लौट गया। हमने फोन पर बहुत कुछ समझाया पर फायदा नहीं हुआ। यही उत्तर मिला कि अगले महीने जरूर आऊँगा । उसका अगला महीना आया ही नहीं। क्या नहीं सहा वीणा ने बेटे के लिए! उसका अतीत सुनते ही मेरी आँखें नम हो गई थीं। .....

वीणा चौथी उत्तीर्ण थी। रिश्तेदारों में अनेक वर देखे पर कम शिक्षित होने के कारण किसी ने पसंद नहीं किया। कंपनी में काम करना याने हर महीना वेतन पाने की गारंटी होने का विचार कर मायके में सभी ने शशिकांत को पसंद किया था। बहुत अरमानों को साथ लिए वह ससुराल पहुँची थी। सोचा था कि ससुराल में पडोसी अच्छे मिलेंगे, गली मोहल्ले में सब प्यार देंगे। एक दूसरे के घर आना-जाना होता रहेगा। पर बेचारी विवाह के कुछ दिनों बाद ही अभिशप्त जीवन जीने के लिए बाध्य हुई थी। विवाह के चार वर्ष बाद भी संतान सुख न मिलने पर पडोसियों के साथ गली-मोहल्ले में भी उपेक्षित रह गई। किसी ने नदी के मँझधार में खड़े होकर पूजा करने की सलाह दी। प्रातः पाँच बजे ही वह नदी में जाकर पूजा करती। बारिश के दिनों में बाढ़ आने की संभावना होती तब भी प्रातः पूजा करने जाती। पानी में बहकर जाने का डर भी होता तब मन कहता, लोगों के ताने सुनने से भी बाढ़ में बह जाना अच्छा ही है। सभी यही कहेंगे कि पानी लाने गई थी तो बाढ़ में बह गई। पर बाढ़ में मरने से पति को लगा कलंक मिटाना संभव नहीं था। इसलिए कोई अलग राह खोज रही थी। किसी ने प्रातः पाँच बजे मंदिर जाकर भगवान के दर्शन के लिए कहा तो किसी ने जड़ी-बूटी खाने के लिए कहा। जड़ी-बूटी घर में रखती थी तो सभी के मन में संदेह होता और उसकी कमियों पर चर्चा होती। पडोसी बूढी काकी ने तो व्रत रखने के लिए कहा। दिनभर पानी की बूँद भी गले के नीचे न उतरती । घर के सारे काम तो उसी के नाम । काम ज्यादा और खाना-पीना कुछ भी नहीं । इससे स्वास्थ्य ढलता रहा । किसी ने तो पति में दोष होने की बात कही। यह भी सुझाव दिया गया था वीणा को कि गाँव के जमींदार का बेटा उसे बहुत चाहता है। कई बार उसके घर के सामने से जाता है। जान-बूझकर उसकी गाड़ी वीणा के घर के सामने ही खराब हो जाती है तो घंटा भर उसीके घर के सामने गाड़ी रिपेयरिंग करता है। पानी का बहाना कर उसके घर जाता है। शशिकांत से मिलने का बहाना करते हुए घघर जाकर वीणा की ओर देखा करता है। गाँव के सभी नागरिक रुपये की जरूरत होने या गेहूँ जवार पीसने हेतु जमींदार के पास ही जाया करते हैं। वीणा विवाह के एक वर्ष पूरे होने तक कहीं बाहर नहीं गई थी। ससुराल वालों की अनुमति से वर्ष के बाद घर के काम के लिए बाहर जाती। उसे कहा गया था कि जमींदार के बेटे से एकांत में अवश्य मिले। किसी को खबर तक नहीं होगी। जवान भी था, दो बच्चों का बाप होने के कारण वीणा को समझाया गया था कि एक-दो बार ही तो

मिलना है, जिंदगी भर का बाँझ का कलंक मिट जाएगा। यह सब सुनकर वीणा का पति भी लज्जा का अनुभव करता रहा । आखिर शहर के डॉक्टर को दिखाया। वह डॉक्टर नहीं मानो भगवान ही था। उसने समझाया, "तुममें बिल्कुल दोष नहीं है और न ही वीणा में दोष है। बस, तुम सप्ताह में दो-तीन बार घर आया करो, बाकी सब ठीक हो जाएगा।" उसने स्पष्ट कह दिया था कि फर्टिलाइजेशन की अवधि में दोनों का अधिक समय साथ होना आवश्यक है।

शशिकांत सप्ताह में एक या दो ही बार गाँव आया करता था। न कोई साधन था और न ही गाँव में कोई नौकरी मिली। सातवीं उत्तीर्ण व्यक्ति को कौन बड़ी नौकरी देता है। मजबूर होकर पचास किलोमीटर दूर शहर में नौकरी करता रहा। वह रात आठ बजे घर आता और सुबह छः बजे चले जाता। चार किलोमीटर चलते जाता और वहाँ से कंपनी जाने के लिए बस मिलती। शहर में ही कंपनी के गोडाउन में छोटा कमरा मिला था। वहीं रहता था। तीन-चार मजदूर एक साथ रसोई बनाते और खाया करते थे।

वीणा की पलभर भी जीने की इच्छा नहीं थी। न सास-ससुर से कुछ कह सकती थी, न घर में जेठानी-देवरानी से कुछ कह सकती थी। पडोसी से क्या कहे, वे तो उसका चेहरा तक देखना पसंद नहीं करते थे। अभागिन वीणा पति की राह देखते हुए पत्थर बन पड़ी रहती थी। आखिर एक दिन सुबह-सुबह उल्टी होने लगी, शुभ संकेत बताया गया। पति के 'कमजोर' और वीणा के 'बाँझ' होने का कलंक मिट गया था। तब भी करने वाले शक कर रहे थे कि इसकी कोख में किसका बच्चा पल रहा है। वीणा शांत रहती। उसने तय किया था कि दुनिया कुछ भी कहे, वह अपनी कोख की रक्षा करेगी। ईश्वर की कृपा से सभी का मुँह अपने आप ही बंद होगा। उसके मिलनसार स्वभाव ने सबके मन में जगह बनाई थी परंतु दकियानूसी विचार के लोगों ने 'बाँझ' शब्द के भय से उसका चेहरा देखना पसंद नहीं किया था। गर्भवती होने पर मायके से आई मिठाई बाँटने के लिए दो-चार घर खुद भी गई तब हँसते हुए स्वागत किया, बधाइयाँ दीं तथा अपना खयाल रखने के लिए भी कहा । शशिकांत भी सप्ताह में दो बार आता रहा तथा अलग-अलग तरह की मिठाइयाँ ले आता। जैसे-जैसे वीणा के प्रसव के दिन नजदीक आते, वह रोज आना-जाना करता रहा। उसके लिए नौकरी से ज्यादा संतान सुख तथा पिता बनना महत्त्वपूर्ण था। वह उसकी उपलब्धि थी। प्रथम प्रसव के लिए वीणा को मायका भी नहीं जाने दिया। उसे अपने आप पर विश्वास था कि वह पूर्ण पुरुष है पर लोगों ने जो भी कहा था उसे अपना पूर्व कर्म मानकर खामोश रहता। गर्भ ठहरने के पहले वीणा ने व्रत उपवास रखा था पर पत्नी के पैर भारी होने पर शशिकांत ने एकाहार शुरू किया। वह एकाहार रहता, रोज मंदिरों में दर्शन करता, फोन पर पत्नी की हालचाल पूछा करता। वीणा ने कहा था, " उपवास तो मुझे रखना चाहिए तुम्हें नहीं। लोग क्या कहेंगे? "

"अरी, कहने वाले को कहने दे, हमें अपना काम करना है। कम-ज्यादा होने पर थोड़े ही कोई आने वाले हैं। तुझे याद है, नदी में की गई पूजा, व्रत, जडीबुटी सब के कारण तेरा स्वास्थ्य कितना ढल गया था! डॉक्टर ने कहा क्या है। अब अपने साथ अपने का भी खयाल रखना होगा तुझे। " सुनकर वीणा खामोश रहती। गली मोहल्ले के लोग भी उनके संयम की प्रशंसा करते।

वीणा माँ बन गई थी। पुत्ररत्न प्राप्त हुआ था। शशिकांत ने तो कंपनी में मित्रों को प्रीतिभोज दिया था। देखते-देखते बालक बड़ा होता रहा। नामकरण कार्यक्रम उत्साह के साथ किया था। नाम रखा गया सुदीप। शशिकांत ने तय किया था कि अब अपने लिए नहीं बेटे के लिए जीना है। उससे बढकर जीवन में कुछ है ही नहीं।

कंपनी में नौकरी करने के बदले उसने गाँव में ही छोटा व्यवसाय शुरू किया । अपनी जमा पूँजी का सदुपयोग किया, अपनों से कर्ज भी लिया था ।समय के साथ कर्ज चुकाता रहा, तरक्की करता रहा। वीणा भी कम परिश्रमी नहीं थी। सुदीप गर्भ में था तब रोज विद्यालय जाने वाले गाँव के बालकों से पुस्तकें माँग लेती। रात दस-ग्यारह बजे तक पढ़ती। दो-तीन दिन में एक-एक पुस्तक पढ़ती रही। "पुस्तकें भले ही छोटी हो पर संस्कार करती हैं।" यही उसका कहना होता। सुदीप अपने घर से ज्यादा पड़ोसी के घर में ही रहता, उनके बच्चे वीणा के घर आते रहें। उनका खेलना कूदना, धींगा मुश्ती करना, सब साथ मिलकर तैरने जाना, गुल्ली डंडा खेलना आदि देखते हुए खुशी से वीणा की आँखें नम हो जातीं । 'क्या-क्या नहीं सुना मैंने अपने जीवन में। यदि कोई और होती तो या तो आत्महत्या करती या निंदकों की जान लेती। ' वह सोचती रहती। अपने बेटे को समझाते हुए उसने कहा था, "बेटा! हमारे लिए सब कुछ तू ही है। तू हमारे लिए जीवन है। तेरी इच्छा ही हमारी इच्छा होगी। बस, एक काम करना, पढ़- लिखकर डॉक्टर या इंजीनियर बनना। हम हर तरह के कष्ट झेलने के लिए तैयार हैं। हर जगह सुदीप-सुदीप की जय जयकार होनी चाहिए।" गली-मुहल्ले में भी वह सबका लाडला बना हुआ था। दिखने में सुंदर, पढ़ाई में अव्वल रहता हमेशा। असफलता उससे कोसों दूर थी। इंजीनियरिंग शिक्षा पूर्ण करते ही विदेशी कंपनी में नौकरी भी मिली। सुबह पिता-पुत्र दोनो घर से निकलते । शशिकांत छः बजे घर लौटता जो सुदीप रात आठ बजे घर लौटता था। कई कान्फरन्सों में उसने अपनी पहचान निर्माण की थी। कंपनी के मैनेजर से अच्छी पहचान हुई। मैनेजर सुदीप को हमेशा अपने घर बुलाकर नए प्लांट की चर्चा करते थे। सुदीप की हर सलाह महत्त्वपूर्ण रहती थी। उसकी वेतन वृद्धि भी होती रही। अहमदाबाद में नया प्लांट शुरू करना था। विदेश से कंपनी मालिक भी आए थे। सुदीप की प्रतिभा सराहनीय रही। कंपनी के हित के लिए उसने मालिक को सलाह दी। कंपनी को भी उसकी सलाह महत्त्वपूर्ण लगी । "सुदीप ! आई थिंक दैट यू शुड बी वुइथ अस इन अमेरिका ।" मालिक ने कहा था। "सर! अमेरिका तो कभी भी आ सकता हूँ। पहले अहमदाबाद का प्लांट तो पूरा होने दीजिए। यदि आपकी शीघ्रता हो तो किसी नए व्यक्ति का चयन कीजिए ताकि कार्य में कोई बाधा निर्माण न हो।"

"लेकिन कंपनी की इच्छा है कि तुम विदेश की कंपनी ज्वाइन करो । मुझे तुम निराश नहीं करोगे, इसका पूरा विश्वास है। " सुदीप खामोश ही रहा। कुछ दिन बाद मित्रों से चर्चा करते समय पता चला कि विदेश की आमदनी अधिक है। उसने विदेश में नौकरी करने की माता-पिता से चर्चा की । वह अपने बेटे की शादी का विचार कर रहा था। जैसे ही बेटे ने पिता के सामने विदेश जाने की जिद की तो मना नहीं कर पाया। घर की आय से शशिकांत परिचित था। वह भी बेटे की उन्नति देखना चाहता था। वीणा ने रिश्तेदारों में लडकी देखी थी। नाम था प्रणाली । घर में सभी ने शादी के बाद ही विदेश जाने की सलाह दी। अपनी आँखों के सामने पली-बढ़ी प्रणाली एम. टेक उत्तीर्ण होकर भी सुसंस्कृत थी । अक्सर सास-बहू में अनबन की चर्चा होती है। परंतु संयुक्त परिवार में पली-बढ़ी प्रणाली अपवाद थी। "सास-ससुर की चिंता करने वाली, उनके सुख-दुख की चर्चा करने वाली बहू किस्मत वालों को ही मिलती है। हम पति-पत्नी तो खुशकिस्मत हैं।" कई बार वीणा ने अपनी सहेलियों से कहा था।

विवाह के कुछ दिन बाद ही बेटा-बहू वीजा की चर्चा करते रहे। वीणा और शशिकांत समझ गए। दुर्भाग्य से तभी शशिकांत की मृत्यु हुई। अचानक आए बुखार तथा खाँसी की ओर आनाकानी की थी। पिता की अंत्येष्टि तथा क्रिया-कर्म पूर्ण कर बेटा-बहू अमेरिका जाने हेतु तैयार हुए। वीणा रातभर सो नहीं पाई, रोती रही। उसकी

सिसकियाँ सुनकर प्रणाली ने वीणा को समझाते हुए कहा, "मम्मी ! आप चिंता मत कीजिए। हमेशा के लिए थोड़े ही जा रहे हैं। चार-पाँच महीने की तो बात है। यों गए और यों आ गए समझो।"

"बेटी! मैंने बहुत बारिश देखी है। कम पढ़ी-लिखी हूँ पर दुनिया जानती हूँ। यहाँ कोई किसी का नहीं होता। रिश्तों में बढ़ती दूरी को, समाज-मानस को मैंने बारीकी से देखा है।"

"माँ! तू भी क्या कह रही है। यदि संदेह हो तो तू भी चल हमारे साथ। वहाँ की ठंड़ हम सह नहीं पाते। घर में हीटर चलाते रहते हैं वहाँ। और तू ठहरी आस्तिक। रोज सुबह जल्दी उठकर कुएँ का पानी कहाँ से लाऊँ मैं वहाँ । और तू इस तरह साडी पहनकर घूमेगी तो खून जमा हो जाएगा। तू जानती है, वहाँ का तापमान कभी-कभी माइनस रहता है। फिर भी तुझे आना है तो मैं ले जाने तैयार हूँ।" सुदीप ने बिना सांस लिए एकदम कह दिया। खामोश रहने के सिवा कोई चारा नहीं था। शशिकांत की मृत्यु के बाद बेटा-बहू अमरिका चले गए। वह अपनी गोद में पोते को लेकर बैठना चाहती थी पर कुछ कह नहीं पाई। सुदीप अमरिका से जरूर वीडियो कॉल करता रहा। वहाँ के विभिन्न द्वीप समूह, कनाडा, वाशिंगटन, मेक्सिको, लॉस एंजेलिस, डैलस, सैन फ्रांसिस्को, बोस्टन, फिलाडेल्फिया आदि शहरों की जानकारी देता रहा । वीणा अपने कमरे से बाहर आकर पड़ोसियों को दिखाया करती थी। एक दिन सुदीप ने वीडियो कॉल करते हुए दादी बनने की खुशखबर दी। सुनते ही वीणा की आँखों से खुशी के आँसू भर आए।

"बेटा, शिशु को दिखाना तो सही। मुझे मालूम है कि वह या तो तुझ जैसा या तेरे पिता की तरह होगा।"

"अरी माँ! तू भी क्या घीसीपीटी बातें करती है। वह तो अमरिकन नागरिकों की तरह गोरा है।"

"खुश रहो बेटा! प्रणाली को भी अभिनंदन कहना।" फोन पर बातें भी महीने में चार-पाँच बार होती रहीं । धीरे-धीरे फोन करना कम किया। वीणा खुद फोन करती तो सुदीप फोन काटता रहता। दुबारा फोन करने पर उत्तर मिलता, "माँ ! मैं कंपनी का काम देखूँ कि हमेशा फोन पर बातचीत करता रहूँ। मेरी भी पर्सनल लाइफ है। रोज-रोज सुबह-शाम फोन रिसीव नहीं कर पाता।" बेटे का उत्तर सुनकर वीणा मन-ही-मन रोती रहती । उसे पति का वाक्य याद आता। उसने कई बार वीणा को समझाते हुए एक और संतान की इच्छा व्यक्त की थी पर वीणा ने ही मना किया था। वह सोचती रहती - 'पति की बात मानती तो कितना अच्छा होता। एक विदेश भी जाता तो दूसरा हमेशा मेरे साथ रहता।' पति की मृत्यु के बाद उसने व्यवसाय बंद किया था। पुश्तैनी संपत्ति विभाजन के बाद खेती की जितनी आमदनी होती, वह दवादारु, किराणा सामान खरीदने में उड़ जाती। बेटे को फोन करती तो महीने में तीन-चार हजार रुपये भेजता । उन्हीं रुपयों से घर चलाती। .....

मैंने एक दिन वीणा को सुबह दस बजे तक सोते हुए देखा तो घबरा गया। क्या हुआ है वीणा को। दस बजे उठकर वह कहती रही , " मैं प्रातः पाँच बजे ही उठी थी। मंदिर जाकर पोते के स्वास्थ्य के लिए माला घुमाती रही । अभी लौट आई और पलभर के लिए आराम कर रही थी।" गली-मुहल्ले के लोग उत्तर सुनकर हँसते थे। कोई उसे 'भोली भाली दादी' या 'अंधविश्वासी दादी' कहते। एक-दो बार प्रणाली से फोन पर बातचीत करते हुए भारत लौटने के बारे में पूछा तो उसने कहा," मम्मी ! मेरी तो भारत ही आने की इच्छा है। मुन्ने को यहाँ का तापमान सूट नहीं हो पाता पर इसके पापा मेरी बात मानने के लिए तैयार नहीं।"

"वह जिद्दी तथा अडियल है। मेरी कुछ मानता नहीं । बचपन से उसका स्वभाव ही वैसा ही, फिर भी तू जरा समझाना । और कहना कि इस बार नवरात्र भारत में मनाऊँगी !"

"जी मम्मी ! कोशिश करती हूँ।" प्रणाली ने कहा था पर सुदीप ने एक बात भी नहीं मानी। कंपनी के काम हेतु दिल्ली तक आकर फ्लाइट से उसी दिन लौटता था पर माँ का विचार भी मन में नहीं आता।

समय के साथ माँ का फोन रिसीव न करने से वीणा चिंतित रहती तो पडोसी उसे समझाते, हिम्मत बाँधते रहते। एक दिन वीणा के घर आई सहेली ने बात छेडते हुए उसे अमेरिका चली जाने की सलाह दी थी। चार वर्षों से वह अकेली रहती थी। शुगर तथा बीपी होने से बुढापे में संतान का पास में होना आवश्यक था। एक दिन श्रवण ने सुदीप से फोन पर कहा था, "अरे ये साले ! क्या तू इतना बड़ा बन गया है कि विधवा माँ को भी भूलता जा रहा है।"

"अरे श्रवण! तुझे क्या बताऊँ यार, आज दलदल में इस तरह फँस गया हूँ कि एक पैर बाहर निकालूँ तो दूसरा पैर कीचड़ में और गहरा धँसता है। प्लीज यार ! तू ही जरा माँ की ओर ध्यान देना । उसे कुछ जरूरत हो तो तुरंत लाकर देना प्लीज!"

"अरे ओ प्लीज के बच्चे ! मेरे लिए तेरी माँ हो या मेरी माँ, दोनो समान हैं। मैंने कभी भेदभाव नहीं किया। उनके बुढापे में ध्यान नहीं देंगे तो हमारे बच्चे हमें पहचानेंगे कैसे? इसीलिए तो सप्ताह में तीन-चार बार कभी अनाज खरीदने, कभी दवा खरीदने, कभी कपड़ा खरीदने शहर जाता हूँ तो चाची के लिए कुछ न कुछ अवश्य खरीदता हूँ। मेरी इच्छा है कि तू जीवन के अंतिम क्षणों में माँ को अपने साथ रखना। यह संभव नहीं तो भारत लौटकर यहाँ किसी कंपनी में नौकरी करना।"

"हाँ यार! मैं भी वही सोच रहा हूँ। तू एक काम करना प्लीज ! आखिर हम बचपन से साथ में पढ़ते आए हैं, खेलते-कूदते समय भी हमारा साथ रहा है। तू मेरी माँ की ओर ध्यान देना । यदि कुछ कम-ज्यादा हो तो भी अपनी माँ समझकर काम करना। जो भी मेडिकल बिल होगा, मैं तुझे दूँगा।"

श्रवण मित्तल कुछ दिन वीणा की ओर ध्यान देता रहा। एक दिन प्रतियोगिता परीक्षा का परिणाम घोषित होने पर वह भी नौकरी के लिए चल पड़ा। साथ में माता-पिता, पत्नी-बच्चे सभी थे। वीणा उसके साथ जाने राजी नहीं हुई। "यदि मैं मित्तल के साथ जाऊँ तो लोग पीछे क्या कहेंगे? खुद का बेटा सँभालने तैयार नहीं है। दूसरे देश चला गया है शेखी बघारने और यह बूढ़ी दूसरे के घर में काम करने नौकरानी की तरह चली गई है। हे भगवान्! ऐसा शापित बुढापा शत्रु के जीवन में भी न आए। इससे मरना ही अच्छा है।" सोचते हुए व्यथित हो जाती। थकी-मांदी वीणा अकेली पड़ गई थी। अब उसकी ओर ध्यान देने वाला कोई नहीं था। पेटदर्द होने पर वीणा ने सुदीप को फोन किया तो प्रतिसाद नहीं मिला। "माँ! मैं किसी कसबे में नहीं, अमरिका में रहता हूँ। गँवारा बनकर भारत लौट आऊँ तो पेट कैसे भरेगा। दूसरी बात, मैंने यहाँ एक फ्लैट देखा है, चालीस लाख रुपये कहा है। क्या करूँ माँ, अब तू ही बता। देख माँ ! तूने मेरे लिए कितना कष्ट सहा है, ताने सुने, नदी में खड़े होकर पूजा की, वह भी बाढ़ आने पर भी। अब तुझे एक और अनुरोध करता हूँ , श्रवण की तरह दूसरा कोई व्यक्ति देखना, जो तुझे माँ की तरह देख सके। रुपये की जरूरत मैं पूर्ण करूँगा। रही बात तुम्हें संभालने की । उसके भी रुपये उसे भेजता रहूँगा। बस, युवक तेरा खयाल रखने वाला, ईमानदार हो।" इतना सुनते ही वीणा

की आँखों से आँसू बहने लगे। "हे भगवान ! अब इतना ही कहना रह गया था कि मेरी अंत्येष्टि कोई पराया व्यक्ति करे। उसका भी किराया दे दूँगा। धन्य हो गई मेरी कोख, जिसमें तुझ जैसी संतान ने जन्म लिया। अब रहा क्या जिंदगी में...।" देर तक रोती रही फिर शांत हो गई। उसका रुदन देखते हुए मैं चिंतित अवश्य होता, रोता भी मन-ही-मन ।

रोज सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य को अर्घ्य देने वाली वीणा दो दिन नजर नहीं आई। किसी को पता भी नहीं था। किसी से उसने कहा भी नहीं था। तीसरे दिन दिखाई दी तो शांत मुद्रा में बैठी नजर आई। पूछने पर पता चला कि शहर में डॉक्टर से मिलने गई थी। गली-मोहल्ले के दो-चार लोगों ने गुस्सा किया और कहा कि इस उम्र में किसी से कहे बिना घर के बाहर न जाए। इतना कहना ही काफी था, उसने घर के बाहर कदम ही नहीं रखा। उसे अपना बचपन याद आता । मन ही मन कहती , " गाँव के किसी भी व्यक्ति की मृत्यु का समाचार सुनते तो गाँव शोक में डूब जाता। अपने ही नहीं, पराये भी चूल्हा तक नहीं जलाते। अंत्येष्टि के बाद ही गाँव में चूल्हा जलता था। अंतिम दर्शन के लिए लोगों की भीड़ होती थी। व्यक्ति चाहे गरीब हो या अमीर, अंत्येष्टि में ग्रामवासी चलते हुए जाते और कंधा देते रहते। आज घर के सदस्यों की आँखों से ही आँसू बहते नहीं। इसे क्या कहे। मृत्यु से पहले ही मनुष्य की संवेदना की मृत्यु होना मानवता के लिए अभिशाप नहीं तो क्या है? " उसने अचानक श्रवण को फोन किया। कहा था, "श्रवण ! तुझे सरकारी नौकरी मिल गई है। अभिमान की बात है। आनंद ही होगा। तुझसे एक बार मिलने, बात करने की मेरी इच्छा है। मैं जानती हूँ कि तुझे छुट्टी नहीं मिलेगी। एक दिन के लिए इतनी दूर आना संभव भी नहीं, फिर भी अनुरोध करती हूँ। बस! एक बार जरूर मिलना। बहुत सारी बातें फोन पर नहीं कह सकती हूँ। मुझे विश्वास है कि मेरे वात्सल्य को तू भूल नहीं सकता है।" श्रवण ने भी रविवार आने का वादा किया था। नौकरी मिलने पर पहली बार गाँव आ रहा था। जैसा कहा था वैसा रविवार सुबह जल्दी ही गाँव पहुँच गया। रातभर यात्रा की थी। सुबह सात बजे ही वीणा के घर पहुँचा। दरवाजा बंद ही था। दो-तीन बार आवाज देने पर भी दरवाजा नहीं खुला। श्रवण को संदेह हुआ। रोज सुबह जल्दी उठने वाली आज सात बजे तक कैसे सो सकती है। खिडकी से झाँककर देखा । पिछला दरवाजा खुला ही था। श्रवण ने भीतर कदम रखा तो घबरा गया। हाथ पैर ठंड़ हो गए थे। उसके बाजू में चिट्ठी पड़ी थी। श्रवण ने चिट्ठी पढ़ना शुरू किया। उसमें लिखा हुआ था, "मैं पिछली बार मेडिकल कॉलेज गई थी। मृत्यु के बाद देहदान करने इच्छुक व्यक्ति सरकारी मेडिकल कॉलेज के एनाटॉमी विभाग में संपर्क करेंगे तो पूरी जानकारी मिलेगी, यह बात अच्छी तरह से जानती थी। डॉ. शर्मा, डॉ. पुष्पदंत ने पंजीकरण करने की सलाह दी थी। वहाँ जाने पर मुझे देहदान का महत्त्व पता चला। चिकित्सा अनुसंधान तथा शिक्षा के उद्देश्य से मृत्युपरांत शरीर दान करना सबसे बड़ा पुण्यकार्य है। डॉ. पुष्पदंत ने कहा भी था। मैं भी जानती थी कि समाज को कुशल चिकित्सक देने हेतु मानव शरीर रचना का ज्ञान आवश्यक होता है। मैं यह भी जानती हूँ कि किसी भी धर्म, जाति, भाषा, भूषा के व्यक्ति प्राकृतिक अर्थात नैचरल मृत्यु के उपरांत देहदान कर सकते हैं। संकल्प पत्र, फोटो, दो गवाहों की सहमति, आधार कार्ड इतने कागजात काफी हैं। और ये सारे कागजात अलमारी में सँभालकर रखा है।" चिट्ठी पढ़कर दुखी हुआ था श्रवण । सुदीप को फोन करना चाहा पर चिट्ठी में लिखा था- "सुदीप को फुरसत नहीं मिलती। उसे फोन न करे। सिर्फ एक अनुरोध है कि मेडिकल कॉलेज फोन करें। शेष कार्य वे पूरा करेंगे। गाँव में सभी के सहयोग के लिए धन्यवाद!"

"शायद मैं एक दिन पहले आता तो चाची से खुलकर बातें तो करता और उसकी अंतिम इच्छा तो जानता! " मन-ही-मन कहते हुए श्रवण रो पड़ा। रात में ही वीणा ने पडोसियों के साथ चाय ली थी। सुबह सबको छोड़ चली गई थी। उसकी अंतिम इच्छा पूर्ण की गई। मेडिकल कॉलेज के डॉ पुष्पदंत से मिलने पर उसने काफी सहयोग दिया । वीणा ने देहदान का फॉर्म पहले ही भर दिया था। गली-मोहल्ले के सभी लोगों ने अंतिम दर्शन किया। कार्यालयीन प्रक्रिया पूर्ण करने के बाद एंबुलंस में वीणा की देह रखी गई। सभी अपने-अपने घर लौट गए।

श्रवण तीन दिन की छुट्टी लेकर आया था। गली के लोगों ने चर्चा की। मृत्यु के बाद तीसरे दिन पूजा करना तय किया। पूजा के बाद श्रवण ने रसोई घर में कदम रखा। टेबल पर कागज का टुकड़ा नजर आया। कागज हाथ में लिया। वह कागज नहीं बल्कि वीणा द्वारा लिखी गई चिट्ठी थी। "देहदान का महत्त्व सभी तो नहीं जानते। कोई देहदान नहीं कर पाते तो कम-से-कम के नेत्रदान तो अवश्य करे। देहदान पुण्यकार्य है। इतना ही नहीं, अंत्येष्ठि का कोई प्रश्न ही नहीं, अंत्येष्टि कौन करे इसकी चिंता नहीं। सारे काम मेडिकल कॉलेज द्वारा पूर्ण किए जाएंगे। आज अपनों के लिए, जन्मदाता के लिए समय न हो, तब एक ही अंतिम उपाय है 'देहदान'।" चिट्ठी में अंतिम वाक्य लिखा गया था- " सुदीप से चर्चा की है। उसने भी कहा था- माँ! समय के अभाव में आना संभव नहीं होगा। यदि तू चाहती है तो अंतिम उपाय है देहदान!" पढ़कर श्रवण फबककर रोता रहा।

प्रा. धन्यकुमार जिनपाल बिराजदार
#65, कासार सोसायटी, आई. एम. एस. स्कूल के पास, जुले सोलापुर, सोलापुर, महाराष्ट्र 413008, ई-मेल: djbirajdar@gmail.com, मोबाईल: 9423330737